

+

दशमः पाठः

Ñf"kd% dežhk%

सूर्यस्तपतु मेघाः वा वर्षन्तु विपुलं जलम्।
कृषिका कृषिको नित्यं शीतकालेऽपि कर्मठौ ॥1॥

ग्रीष्मे शरीरं सस्वेदं शीते कम्पमयं सदा।
हलेन च कुदालेन तौ तु क्षेत्राणि कर्षतः ॥2॥

पादयोर्न पदत्राणे शरीरे वसनानि नो।
निर्धनं जीवनं कष्टं सुखं दूरे हि तिष्ठति ॥3॥

गृहं जीर्णं न वर्षासु वृष्टिं वारयितुं क्षमम्।
तथापि कर्मवीरत्वं कृषिकाणां न नश्यति ॥4॥

तयोः श्रमेण क्षेत्राणि सस्यपूर्णानि सर्वदा।
धरित्री सरसा जाता या शुष्का कण्टकावृता ॥5॥

शाकमन्नं फलं दुग्धं दत्त्वा सर्वेभ्य एव तौ।
क्षुधा-तृषाकुलौ नित्यं विचित्रौ जन-पालकौ ॥6॥

+





शब्दार्थः



| | | | |
|----------------|---|--------------------|--------------------------------------|
| तपतु | - | तपाये, जलाये | may burn |
| विपुलम् | - | अत्यधिक | in large amount |
| कर्मठौ | - | निरन्तर क्रियाशील | active |
| सस्वेदम् | - | पसीने से युक्त | full of sweat |
| पदत्राणे | - | जूते | shoes |
| वसनानि | - | कपड़े | clothes |
| जीर्णम् | - | पुराना | old |
| वारयितुम् | - | दूर करने में | in removing |
| क्षमम् | - | समर्थ | able |
| सस्यपूर्णानि | - | फसल से युक्त | full of crops |
| धरित्री | - | पृथ्वी | earth |
| कण्टकावृता | - | काँटों से परिपूर्ण | full of thorns |
| क्षुधातृषाकुलौ | - | भूख प्यास से बेचैन | distressed with hunger and thirst |

अभ्यासः



1. उच्चारणं कुरुत-

| | | |
|-------------|------------|-----------------|
| सूर्यस्तपतु | जीर्णम् | शीतकालेऽपि |
| वारयितुम् | ग्रीष्मे | सस्यपूर्णानि |
| पदत्राणे | कण्टकावृता | क्षुधा-तृषाकुलौ |





60 रुचिरा - प्रथमो भागः

2. श्लोकांशान् योजयत-

क

गृहं जीर्णं न वर्षासु

हलेन च कुदालेन

पादयोर्न पदत्राणे

तयोः श्रमेण क्षेत्राणि

धरित्री सरसा जाता

ख

तौ तु क्षेत्राणि कर्षतः।

या शुष्का कण्टकावृता।

सस्यपूर्णानि सर्वदा।

शरीरे वसनानि नो।

वृष्टिं वारयितुं क्षमम्।

3. उपयुक्तकथनानां समक्षम् 'आम्' अनुपयुक्तकथनानां समक्षं 'न' इति लिखत-

यथा- कृषकाः शीतकालेऽपि कर्मठाः भवन्ति।

आम्

कृषकाः हलेन क्षेत्राणि न कर्षन्ति।

न

(क) कृषकाः सर्वेभ्यः अन्नं यच्छन्ति।

(ख) कृषकाणां जीवनं कष्टप्रदं न भवति।

(ग) कृषकः क्षेत्राणि सस्यपूर्णानि करोति।

(घ) शीते शरीरे कम्पनं न भवति।

(ङ) श्रमेण धरित्री सरसा भवति।





4. मञ्जूषातः पर्यायवाचिपदानि चित्वा लिखत-

रविः वस्त्राणि जर्जरम् अधिकम् पृथ्वी पिपासा

वसनानि

सूर्यः

तृषा

विपुलम्

जीर्णम्

धरित्री

5. मञ्जूषातः विलोमपदानि चित्वा लिखत-

धनिकम् नीरसा अक्षमम् दुःखम् शीते पार्श्वे

सुखम्

दूरे

निर्धनम्

क्षमम्

ग्रीष्मे

सरसा



+



62 रुचिरा - प्रथमो भागः

6. प्रश्नानाम् उत्तराणि लिखत-

- (क) कृषकाः केन क्षेत्राणि कर्षन्ति?
(ख) केषां कर्मवीरत्वं न नश्यति?
(ग) श्रमेण का सरसा भवति?
(घ) कृषकाः सर्वेभ्यः किं किं यच्छन्ति?
(ङ) कृषकात् दूरे किं तिष्ठति?



+